ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

प्राचीन भारतीय मंदिरों में गणेश प्रतिमा के विविध स्वरूपों का अंकन

Prof. Dr. Kavita Singh

Ancient Indian History: Archeology & Culture Department, K.S. Saket P.G. College Ayodhya,

Uttar Pradesh, India

सार

भगवान गणेश देवो के देव भगवान शिव और माता पार्वती के सबसे छोटे पुत्र हैं। भगवान गणेश की पत्नी का नाम रिद्धि और सिद्धि है। रिद्धि और सिद्धि भगवान विश्वकर्मा की पुत्रियां हैं। भगवन गणेश का नाम हिन्दू धर्म में किसी भी शुभ कार्य करने से पहले लिया जाता है।गणपति आदिदेव हैं जिन्होंने हर युग में अलग अवतार लिया। उनकी शारीरिक संरचना में भी विशिष्ट व गहरा अर्थ निहित है। शिवमानस पूजा में श्री गणेश को प्रणव (ॐ) कहा गया है। इस एकाक्षर ब्रह्म में ऊपर वाला भाग गणेश का मस्तक, नीचे का भाग उदर, चंद्रबिंदु लड्डू और मात्रा सूँड है।

चारों दिशाओं में सर्वव्यापकता की प्रतीक उनकी चार भुजाएँ हैं। वे लंबोदर हैं क्योंकि समस्त चराचर सृष्टि उनके उदर में विचरती है। बड़े कान अधिक ग्राह्यशक्ति व छोटी-पैनी आँखें सूक्ष्म-तीक्ष्ण दृष्टि की सूचक हैं। उनकी लंबी नाक (सूंड) महाबुद्धित्व का प्रतीक है।प्राचीन समय में सुमेरू पर्वत पर सौभरि ऋषि का अत्यंत मनोरम आश्रम था। उनकी अत्यंत रूपवती और पतिव्रता पत्नी का नाम मनोमयी था। एक दिन ऋषि लकड़ी लेने के लिए वन में गए और मनोमयी गृह-कार्य में लग गई। उसी समय एक दुष्ट कौंच नामक गंधर्व वहाँ आया और उसने अनुपम लावण्यवती मनोमयी को देखा तो व्याकुल हो गया।

कौंच ने ऋषि-पत्नी का हाथ पकड़ लिया। रोती और काँपती हुई ऋषि पत्नी उससे दया की भीख माँगने लगी। उसी समय सौभरि ऋषि आ गए। उन्होंने गंधर्व को श्राप देते हुए कहा 'तूने चोर की तरह मेरी सहधर्मिणी का हाथ पकड़ा है, इस कारण तू मूषक होकर धरती के नीचे और चोरी करके अपना पेट भरेगा।[1]

काँपते हुए गंधर्व ने मुनि से प्रार्थना की-'दयालु मुनि, अविवेक के कारण मैंने आपकी पत्नी के हाथ का स्पर्श किया था। मुझे क्षमा कर दें। ऋषि ने कहा मेरा श्राप व्यर्थ नहीं होगा, तथापि द्वापर में महर्षि पराशर के यहाँ गणपति देव गजमुख पुत्र रूप में प्रकट होंगे (हर युग में गणेशजी ने अलग-अलग अवतार लिए) तब तू उनका डिंक नामक वाहन बन जाएगा, जिससे देवगण भी तुम्हारा सम्मान करने लगेंगे। सारे विश्व तब तुझें श्रीडिंकजी कहकर वंदन करेंगे।

गणेश को जन्म न देते हुए माता पार्वती ने उनके शरीर की रचना की। उस समय उनका मुख सामान्य था। माता पार्वती के स्नानागार में गणेश की रचना के बाद माता ने उनको घर की पहरेदारी करने का आदेश दिया। माता ने कहा कि जब तक वह स्नान कर रही हैं तब तक के लिये गणेश किसी को भी घर में प्रवेश न करने दे। तभी द्वार पर भगवान शंकर आए और बोले "पुत्र यह मेरा घर है मुझे प्रवेश करने दो।" गणेश के रोकने पर प्रभु ने गणेश का सर धड़ से अलग कर दिया। गणेश को भूमि में निर्जीव पड़ा देख माता पार्वती व्याकुल हो उठीं। तब शिव को उनकी त्रुटि का बोध हुआ और उन्होंने गणेश के धड़ पर गज का सर लगा दिया। उनको प्रथम पूज्य का वरदान मिला इसीलिए सर्वप्रथम गणेश की पूजा होती है। गणेशजी को सिन्दूर और दूब चढ़ाने से विशेष फल मिलता है। इसके अतिरिक्त उन्हें गुड़ के मोदक और बूंदी के लड्डू , शामी वृक्ष के पत्ते तथा सुपारी भी प्रिय है। गणेश जी को लाल धोती तथा हरा वस्त्र चढ़ाने का भी विधान है।

परिचय

त्रिनेत्र गणेश, रणथम्भौर

यह मंदिर भारत के राजस्थान प्रांत में सवाई माधोपुर जिले में स्थित है, जो कि विश्व धरोहर में शामिल रणथंभोर दुर्ग के भीतर बना हुआ है। अरावली और विन्ध्याचल पहाड़ियों के बीच स्थित रणथम्भौर दुर्ग में विराजे रणतभंवर के लाड़ले त्रिनेत्र गणेश के मेले की बात ही कुछ निराली है। यह मंदिर प्रकृति व आस्था का अनूठा संगम है। भारत के कोने-कोने से लाखों की तादाद में दर्शनार्थी यहाँ पर भगवान त्रिनेत्र गणेश जी के दर्शन हेतु आते हैं और कई मनौतियां माँगते हैं, जिन्हें भगवान त्रिनेत्र गणेश पूरी करते हैं। इस गणेश मंदिर का निर्माण महाराजा हम्मीरदेव चौहान ने करवाया था लेकिन मंदिर के अंदर भगवान गणेश की प्रतिमा स्वयंभू है। इस मंदिर में भगवान गणेश त्रिनेत्र रूप में विराजमान है जिसमें तीसरा नेत्र ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। पूरी दुनिया में यह

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

एक ही मंदिर है जहाँ भगवान गणेश जी अपने पूर्ण परिवार, दो पत्नी- रिद्दि और सिद्दि एवं दो पुत्र- शुभ और लाभ, के साथ विराजमान है। भारत में चार स्वयंभू गणेश मंदिर माने जाते है, जिनमें रणथम्भौर स्थित त्रिनेत्र गणेश जी प्रथम है। इस मंदिर के अलावा सिद्दपुर गणेश मंदिर गुजरात, अवंतिका गणेश मंदिर उज्जैन एवं सिद्दपुर सिहोर मंदिर मध्यप्रदेश में स्थित है।[1] कहाँ जाता है कि महाराजा विक्रमादित्य जिन्होंने विक्रम संवत् की गणना शुरू की प्रत्येक बुधवार उज्जैन से चलकर रणथम्भौर स्थित त्रिनेत्र गणेश जी के दर्शन हेतु नियमित जाते थे, उन्होंने ही उन्हें स्वप्न दर्शन दे सिद्दपुर सीहोर के गणेश जी की स्थापना करवायी थी। [१] महाराजा हम्मीरदेव चौहान व दिल्ली शासक अलाउद्दीन खिलजी का युद्ध 1299-1301 ईस्वी के बीच रणथम्भौर हुआ। उस समय अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर के दुर्ग को चारों तरफ से घेर लिया था, नौ माह से भी अधिक रणथम्भौर दुर्ग चारों तरफ से मुगल सेना से घिरा हुआ होने के कारण रणथम्भौर दुर्ग में रसद सामग्री शन: शन: खत्म होने लगी, उस समय महाराजा हम्मीरदेव चौहान को स्वप्न में गणेश जी के दर्शन हुए। राजा हम्मीरदेव ने गणेश की मूर्ति की पूजा की। किंवदंती के अनुसार भगवान राम ने जिस स्वयंभू मूर्ति की पूजा की थी उसी मूर्ति को हम्मीरदेव ने यहाँ पर प्रकट किया। [२] भगवान राम ने लंका कूच करते समय इसी गणेश का अभिषेक कर पूजन किया था। अत: त्रेतायुग में यह प्रतिमा रणथम्भौर में स्वयंभू रूप में स्थापित हुई और लुप्त हो गई।

[३] एक और मान्यता के अनुसार जब द्वापर युग में भगवान कृष्ण का विवाह रूकमणी से हुआ था तब भगवान कृष्ण गलती से गणेश जी को बुलाना भूल गए जिससे भगवान गणेश नाराज हो गए और अपने मूषक को आदेश दिया की विशाल चूहों की सेना के साथ जाओं और कृष्ण के रथ के आगे सम्पूर्ण धरती में बिल खोद डालो। इस प्रकार भगवान कृष्ण का रथ धरती में धँस गया और आगे नहीं बढ़ पाये। मूषकों के बताने पर भगवान श्रीकृष्ण को अपनी गलती का अहसास हुआ और रणथम्भौर स्थित जगह पर गणेश को लेने वापस आए, तब जाकर कृष्ण का विवाह सम्पन्न हुआ। तब से भगवान गणेश को विवाह व मांगलिक कार्यों में प्रथम आमंत्रित किया जाता है। यही कारण है कि रणथम्भौर गणेश को भारत का प्रथम गणेश कहते है। रणथम्भौर स्थित त्रिनेत्र गणेश जी दुनिया के एक मात्र गणेश है जो तीसरा नयन धारण करते है। गजवंदनम् चितयम् में विनायक के तीसरे नेत्र का वर्णन किया गया है, लोक मान्यता है कि भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र उत्तराधिकारी स्वरूप सौम पुत्र गणपति को सौंप दिया था और इस तरह महादेव की सारी शक्तियाँ गजानन में निहित हो गई। महागणपति षोड्श स्त्रौतमाला में विनायक के सौलह विग्रह स्वरूपों का वर्णन है।[2] महागणपति अत्यंत विशिष्ट व भव्य है जो त्रिनेत्र धारण करते है, इस प्रकार ये माना जाता है कि रणथम्भौर के रणतभंवर महागणपति का ही स्वरूप है।

खजराना गणेश मंदिर एक हिंदू मंदिर परिसर है, जो भारत के मध्य प्रदेश राज्य में इंदौर के खजराना क्षेत्र में स्थित है। परिसर में मुख्य मंदिर भगवान गणेश को समर्पित है । इसका निर्माण होल्कर राजवंश की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने करवाया था । इस मंदिर का निर्माण 1735 में होल्कर राजवंश की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने करवाया था, जिन्होंने भगवान गणेश की मूर्ति को एक कुएं से प्राप्त किया था, जहां इसे मुगल शासक औरंगजेब से सुरक्षित रखने के लिए छिपाया गया था । [1] भक्त अपने कार्य के सफल समापन के लिए भगवान गणेश से प्रार्थना करने के लिए मंदिर की परिक्रमा करते हैं और धागा बांधते हैं। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर में प्राचीन मूर्ति एक स्थानीय पुजारी पंडित मंगल भट्ट के सपने में देखी गई थी। मंदिर का प्रबंधन आज भी भट्ट परिवार द्वारा किया जाता है। [1]

नागपुर में टेकड़ी गणपत बाप्पा का 250 साल पुराना मंदर

इस पवित्र स्थान पर गणपति तो मौजूद हैं ही. यहां पीपल के पेड़ के रूप में भगवान विष्णु भी वास करते हैं. वैसे तो हर पूजा की शुरुआत गणपति की अराधना से होत. नागपुर के टेकड़ी गणपति बाप्पा विघ्नहर्ता के रूप में माने जाते हैं. नागपुर शहर के सीताबर्डी स्थित गणपति का यह भव्य दिव्य मंदिर करीब 250 वर्ष पुराना बताया जाता है. कहा जाता है कि इस मंदिर में भगवान श्रीगणेश की मूर्ति खुद से विराजमान है. यानी 250 वर्ष पूर्व पीपल के पेड़ के नीचे यह प्रतिमा खुद प्रकट हुई थी. बाप्पा की मूर्ति आज भी पीपल के पेड़ के नीचे ही विराजमान है. बाप्पा को चांदी का मुकुट लगाया गया है. [3]

खजराना का गणेश मंदिर अपने चमत्कारों के लिए भक्तों के बीच काफी लोकप्रिय हैं. इस गणेश मंदिर से जुड़ी मान्यता है कि यहां भक्तों की हर मनोकामना पूरी होती ह. मन्नत पूरी होने के बाद भक्त जन भगवान गणेश की प्रतिमा की पीठ पर उल्टा स्वास्तिक बनाते हैं और गणेश जी को मोदक और लड्डु का भोग लगाते हैं. मान्यताओं के अनुसार, खरजाना के एक स्थानीय पंडित मंगल भट्ट को सपने में भगवान गणेश ने दर्शन देकर उन्हें मंदिर निर्माण के लिए कहा था. उस समय होलकर वंश की महारानी अहिल्या बाई का राज था. पंडित ने अपने स्वप्न की बात रानी अहिल्या बाई को बताई. जिसके बाद रानी अहिल्या बाई होलकर ने इस सपने की बात को बेहद गंभीरता से लिया और स्वप्न के अनुसार उस जगह खुदाई करवाई. खुदाई करवाने पर ठीक वैसी ही भगवान गणेश की मूर्ति प्राप्त हुई जैसा पंडित ने बताया था. इसके बाद यहां मंदिर का निर्माण करवाया गया. आज भक्तों की हर मनोकामना पूर्ण होने से इस मंदिर को विश्व स्तर की ख्याति प्राप्त हो चुकी है. [5]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

विचार-विमर्श

मोटा गणेश मंदिर वृन्दावन:
वृन्दावन को मंदिरों की भूमि के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह कई दिव्य मंदिरों का घर है जो दुनिया भर से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं। विभिन्न प्रकार के मंदिरों और संस्कृति से भरपूर, वृन्दावन को एक छोटी दुनिया माना जाता है जहाँ आप हर धर्म के भक्तों को पा सकते हैं चाहे वह हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध धर्म या जैन धर्म हो। हिंदू संस्कृति में गणेश जी को शुरुआत का देवता माना जाता है, भारत में हर अनुष्ठान और संस्कार में उन्हें सबसे पहले सम्मानित किया जाता है। हाथी के सिर वाले भगवान को बुद्धि और विवेक के देवता के रूप में भी जाना जाता है, लेकिन वृन्दावन में भगवान गणेश का केवल एक ही मंदिर है जिसे मोटे गणेश के नाम से जाना जाता है।

जैसा कि नाम से पता चलता है, वृन्दावन में मोटे गणेश की पूजा उनके विशाल रूप में की जाती है। मंदिर में गणेश जी अपनी पत्नियों रिद्धि और सिद्धि के साथ रहते हुए एक दिव्य मूर्ति हैं, जिसके बारे में मान्यता है कि यह भक्तों की सभी इच्छाओं को पूरा करती है। यह मंदिर बाजार के बीच में स्थित है और स्थानीय लोगों के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों से आए तीर्थयात्रियों द्वारा भी इसकी पूजा की जाती है। वृन्दावन में मुख्य बाजार की सड़कों के किनारे स्थित इस छोटे से मंदिर का शांत वातावरण इस मंदिर को देखने लायक जगह बनाता है।

मोटा गणेश मंदिर: भगवान गणेश का एकमात्र प्राचीन मंदिर
वृन्दावन में मोटा गणेश मंदिर वृन्दावन के प्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर के पास अठखंभा में स्थित है । यह मंदिर स्थानीय निवासियों के बीच अधिक प्रसिद्ध है जो प्रतिदिन इस मंदिर में आते हैं। मोटे गणेश मंदिर को मंदिर में आयोजित कई दावतों के लिए भी जाना जाता है। भगवान को प्रसन्न करने के लिए, मंदिर में 56 भोग की एक शोभा यात्रा का आयोजन किया जाता है, जिसका उद्देश्य भोजन के रूप में भगवान गणेश की लालसा को संतुष्ट करना है।
बृजवाले वह साइट है जिसका लक्ष्य वृन्दावन के कई मंदिरों के बारे में सबसे छोटी जानकारी प्रदान करना है। हमारी जानकारी केवल प्रसिद्ध या प्रमुख पर्यटक आकर्षणों तक ही सीमित नहीं है; बल्कि आपको वृन्दावन में स्थित हर मंदिर के बारे में जानकारी देने का इरादा है। वृन्दावन की आपकी भरोसेमंद निर्देशिका के रूप में हमारे साथ, आपको बस एक क्लिक के स्पर्श से आनंदमय शहर की खोज का लाभ मिलता है।

माडा गुफाएं
इस क्षेत्र में रॉक कट गुफाओं का समूह है जो 7-8 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में वाडा में 32 किमी की दूरी पर है। माडा की गुफा सिंगरौली जिले के माडा तहसील में स्थित हैं।[7] प्रसिद्ध गुफाओं में विवाह माडा, गणेश माडा और शंकर माडा, जलनालिया और रावण मोडा शामिल हैं। रॉक कट गुफाओं के अलावा, सिंगरौली में रॉक आश्रयों में चित्रित हैं। सिंगरौली के चित्रांगि तहसील में रानीमची, ढोलगिरी और गौरा पहाड़ झूठ हैं। ये पेंटिंग रॉक आश्रय मायक्रॉलीथिक औजार संस्कृति के मेसोथोथिक युग से संबंधित हैं।

जलजलिया माडा गुफाएं
इस गुफा परिसर में दो गुफाएं हैं जिनमें से एक मंदिर गुफा है और दूसरा एक भूमिगत गुफा है, जो एक पूल के रूप में है। मंदिर में भगवान शिव प्रतिमा और देवी की मूर्ति है। सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि पूल गुफा में पानी का एक अज्ञात स्रोत है और संभवतः प्राचीन समय में स्नान पूल के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इस गुफा से करीब 200 मीटर की दूरी पर, एक छोटे से मंदिर देवी सीता को समर्पित है जिसे सीता कुटी नाम से जाना जाता है। यह एक छोटा झरना है, जो कि इच्छा-पूरा जलप्रपात के रूप में भी जाना जाता है और इसलिए स्थानीय लोगों में लोकप्रिय है।[8]

श्री सिद्धिविनायक मंदिर, मुंबई
यह मंदिर भारत के सबसे लोकप्रिय गणपति मंदिरों में गिना जाता है, जहां पर दर्शन करने के लिए हर दिन बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। गणेश चतुर्थी के दौरान इस मंदिर की रौनक बस देखते ही बनती है। इसे ठेकेदार लक्ष्मण विथु पाटिल ने बनवाया था। ऐसा माना जाता है कि यहां पर आने वाली निःसंतान महिलाओं को लाभ मिलता है। मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित यह सिद्धिविनायक गणपति मंदिर रात के समय बहुत सुंदर दिखता है।

कनिपकम विनायक मंदिर, चित्तूर

यह खूबसूरत मंदिर आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुपति से लगभग 75 किमी दूर स्थित है। यह भारत के सर्वश्रेष्ठ प्राचीन गणपति मंदिरों में से एक है, जो अपनी ऐतिहासिक संरचना और आंतरिक डिजाइन के लिए जाना जाता है। यहां पर देश के

विभिन्न हिस्सों से भक्तगण भगवान गणेश की पूजा करने के लिए आते हैं, जिनकी मूर्ति के माथे पर तीन रंग हैं, सफेद, पीला और लाल। बता दें कि इस मंदिर का निर्माण चोल राजा कुलोथिंग्स चोल प्रथम ने 11वीं शताब्दी में करवाया था।

मधुर महागणपति मंदिर, केरल

यह केरल में स्थित एक प्राचीन मंदिर है, जिसे 10वीं सदी में बनाया गया था। केरल के कासरगोड में मधुवाहिनी नदी के तट पर स्थित इस मंदिर का निर्माण कुंबला के मायपदी राजाओं द्वारा करवाया गया था। ऐसा माना जाता है कि मंदिर में भगवान गणेश की एक मूर्ति है, जो पत्थर या मिट्टी से नहीं बल्कि एक अलग सामग्री से बनी है। इस मंदिर के पीठासीन देवता भगवान शिव हैं, [9]हालांकि, भगवान गणेश की मूर्ति की विशिष्टता इस मंदिर को पर्यटकों के बीच लोकप्रिय बनाती है। मंदिर में एक तालाब है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसमें औषधीय और उपचारात्मक गुण हैं जो त्वचा की बीमारी या अन्य दुर्लभ बीमारी को भी ठीक कर सकते हैं।

इसे भी पढ़ें: साल में सिर्फ एक बार खुलता है भोलेनाथ का यह मंदिर, बाबा के दर्शन के लिए उमड़ती है भक्तों की भीड़

मनाकुला विनयगर मंदिर, पुडुचेरी

मनाकुला विनयगर मंदिर का निर्माण फ्रांसीसी क्षेत्र पांडिचेरी के दौरान किया गया था जो 1666 साल पहले का है। ऐसा माना जाता है कि यहां की गणेश प्रतिमा को कई बार समुद्र में फेंका गया था, लेकिन यह हर दिन उसी स्थान पर फिर से प्रकट होती है। ब्रह्मोत्सव और गणेश चतुर्थी मंदिर के दो सबसे महत्वपूर्ण त्योहार हैं, जिन्हें पुडुचेरी के लोगों द्वारा बड़े उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। मंदिर में एक हाथी है, जिस पर लोग सिक्का चढ़ाते हैं और सूंड के माध्यम से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।[10]

परिणाम

सिद्धिविनायक महागणपति मंदिर एक हिंदू मंदिर है जो भारत के महाराष्ट्र राज्य में मुंबई के पास ठाणे जिले के कल्याण तालुका के एक छोटे से शहर टिटवाला में स्थित है । यह मंदिर हिंदू, हाथी के सिर वाले ज्ञान के देवता गणेश को समर्पित है । टिटवाला को शकुंतला के पालक माता-पिता कण्व ऋषि का आश्रम स्थल माना जाता है जो यहीं पैदा हुआ था. यह स्थान प्राचीन किंवदंतियों में डूबा हुआ है और इस विश्वास के कारण कि मंदिर में स्थापित गणेश प्रतिमा की पूजा की जाए तो अलग हुए विवाहित जोड़े एक हो सकते हैं और वांछित लोगों की शादियां आसानी से तय हो सकती हैं, इस मंदिर में बहुत बड़ी संख्या में भक्त आते हैं। भक्ति के साथ। इस मंदिर में अधिकतर मंगलवार को दर्शन होते हैं। [1] [2] किंवदंती के अनुसार, यह गांव दंडकारण्य जंगल का हिस्सा था जहां कातकरी जनजाति रहती थी (आदिवासी बस्तियां अब भी कालू नदी के पार शहर के करीब स्थित हैं, जहां केवल नावों द्वारा ही पहुंचा जा सकता है)। [3] ऋषि कण्व का आश्रम यहीं था। कण्व धर्मग्रंथ ऋग्वेद के कई भजनों और अंगिरसों में से एक के रचयिता थे । उन्होंने शकुंतला को गोद लिया था , जिसे उसके जन्म के तुरंत बाद उसके माता-पिता, ऋषि विश्वामित्र[11] और दिव्य कन्या मेनका ने त्याग दिया था । शकुंतला की कहानी हिंदू महाकाव्य महाभारत में वर्णित है और कालिदास द्वारा इसका नाटक किया गया है, संस्कृत भाषा के सबसे महान कवि और नाटककार माने जाते हैं , जिन्होंने अभिज्ञानशाकुंतलम ("शकुंतला की पहचान") नामक अपने नाटक में अभिनय किया था । [4]

गांधार साम्राज्य के राजा दुष्यन्त युद्ध अभियान के दौरान जंगलों से गुजर रहे थे, तभी उन्हें और शकुंतला को एक-दूसरे से प्यार हो गया और उन्होंने आश्रम में गंधर्व रीति (विवाह प्रतिज्ञा के रूप में एक-दूसरे को माला पहनाना) के अनुसार विवाह कर लिया। चूँकि कुछ समय बाद अपनी राजधानी में अशांति के कारण दुष्यंत को शकुंतला को छोड़ना पड़ा, इसलिए उन्होंने शकुंतला को अपने प्यार की निशानी के रूप में एक शाही निशान (एक अंगूठी) दी, और उससे वादा किया कि वह उसके लिए वापस आएगा। [4]

एक बार, जब शकुंतला आश्रम में अपने पति दुष्यन्त के बारे में सोच-विचार कर स्वप्न में डूबी हुई थी, तब उसने उस स्थान पर भ्रमण कर रहे ऋषि दुर्वासा पर अपेक्षित आदर भाव से ध्यान नहीं दिया। दुर्वासा, जो अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए जाने जाते थे, इस मामूली सी बात से आहत हुए और उन्होंने शकुंतला को श्राप देते हुए कहा कि जिस व्यक्ति के बारे में वह सपना देख रही है वह उसे पूरी तरह से भूल जाएगा। हालाँकि, बाद में, दुर्वासा ने अपने श्राप को हल्का करते हुए कहा कि जो व्यक्ति शकुंतला को भूल गया था, उसे सब कुछ फिर से याद हो जाएगा यदि वह उसे एक व्यक्तिगत टोकन दिखाए जो उसे दिया गया था। श्राप के अनुसार दुष्यन्त ने उसे पहचानने से इंकार कर दिया। [4]

स्थानीय किंवदंती के अनुसार, ऋषि कण्व ने अपनी दत्तक पुत्री शकुंतला की समस्या की गंभीरता को महसूस करते हुए उसे भगवान गणेश के सम्मान में सिद्धि विनायक के रूप में एक मंदिर बनाने का निर्देश दिया । उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

उसकी सच्ची प्रार्थनाओं से सिद्धि विनायक उसे आशीर्वाद देंगे और वह एक बार फिर अपने पति दुष्यंत से मिल जाएगी। [3] अंततः काफी प्रयास और समय व्यतीत होने के बाद यह सच हो गया और उस समय तक शकुंतला, जो दुष्यन्त से विवाह करने के बाद गर्भवती हो गई थी, ने एक पुत्र को भी जन्म दिया, जिसे महाभारत महाकाव्य के अनुसार भरत के नाम से जाना गया। पांडव और कौरव भरत के वंशज थे। [4]

कथित पौराणिक पृष्ठभूमि के साथ शकुंतला द्वारा निर्मित सिद्धिविनायक महागणपति मंदिर एक टैंक के नीचे डूबा हुआ था। पेशवा माधवराव प्रथम के शासन के दौरान , शहर में सूखे की स्थिति को हल करने के लिए, शहर को पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए टैंक से गाद निकाली गई थी। गाद निकालने के अभियान के दौरान ही मंदिर दबा हुआ पाया गया था।[12] भगवान गणेश की प्रतिमा पेशवा सरदार रामचन्द्र मेहेंदले को गाद में दबी हुई मिली थी। इसके तुरंत बाद, मंदिर का नवीनीकरण किया गया और एक पत्थर का मंदिर बनाया गया। वसई किले पर विजय के बाद पेशवा माधवराव प्रथम ने इस नए मंदिर में प्राचीन गणेश प्रतिमा की प्रतिष्ठा की। प्रारंभ में, मंदिर लकड़ी के सभा मंडप के साथ बहुत छोटा था(दर्शक कक्ष), जो जर्जर हालत में था। चूँकि समय के साथ पेशवा मंदिर भी ख़राब हो गया था, 1965-66 में, नवीकरण कार्य फिर से शुरू किया गया और उसी स्थान पर ₹ 200,000 (US$2,500) की लागत से एक नया मंदिर बनाया गया।

वर्तमान मंदिर पेशवाओं द्वारा दान की गई 3-5 एकड़ (1-2 हेक्टेयर) भूमि पर बनाया गया है, जिसे मंदिर के वंशानुगत पुजारी जोशी द्वारा दान की गई 12 एकड़ (4.9 हेक्टेयर) अतिरिक्त भूमि द्वारा पूरक किया गया था। मौजूदा दर्शक कक्ष, नवीनीकरण के बाद, 90 फीट (27 मीटर) x45 फीट (14 मीटर) का है और इसमें दीर्घाएँ प्रदान की गई हैं जो मुख्य हॉल की ओर देखती हैं। जिस ऊंचे मंच पर पत्थर से मंदिर बनाया गया है उसकी ऊंचाई 3.5 फीट (1.1 मीटर) है। मंदिर के हॉल में संगमरमर का फर्श है। हाल ही में, छवि की आंखों और नाभि को माणिक पत्थरों से सजाया गया है। [13]मुख्य प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर एक मंदिर है जिसमें एक शिव - लिंग है । मंदिर के सामने एक प्रभावशाली दीप मीनार भी है। मंदिर शिखर(शिखर) अष्टविनायक की मूर्तियों से सजाया गया है , जो पुणे , महाराष्ट्र के पास आठ प्रतिष्ठित गणेश मंदिरों की केंद्रीय छवियां हैं । [3] [5] [6] [7] मुख्य गर्भगृह में, दाहिने कोने पर श्री वेंगावकर जोशी की पादुकाओं पर एक गणेश भक्त भी दिखाई देते हैं। [6] [8]

मई 2009 में, मंदिर ट्रस्ट और कल्याण डोंबिवली नगर निगम (KDMC) ने मंदिर का नवीनीकरण पूरा कर लिया है - जो 5 साल पहले शुरू हुआ था। ₹ 15 मिलियन (US$190,000) की लागत से , नवीकरण कार्य मंदिर में आने वाले भक्तों की एक बहुत बड़ी संख्या को पूरा करने के लिए विनियमित प्रवेश व्यवस्था और बुनियादी सुविधाएं प्रदान करता है। मंदिर के बगल में स्थित टिटवाला तालाब झील को भी हाल ही में साफ किया गया है और नौकायन के लिए सुविधाएं बनाई गई हैं।[15]

वर्णित लोकप्रिय कथा के आधार पर, हिंदुओं का मानना है कि टिटवाला गणेश की भक्तिपूर्वक पूजा करने से, किसी के इच्छित व्यक्ति से विवाह हो जाएगा और वैवाहिक कलह का खुशी से समाधान हो जाएगा। [9] मंदिर में लाखों भक्त आते हैं, [8] विशेष रूप से अंगारिका चतुर्थी (अंगारिकी) पर - एक मंगलवार जो चंद्र शुक्ल पक्ष के चौथे दिन आता है। मंगलवार और चंद्र पखवाड़े के चौथे दिन को गणेश पूजा के लिए शुभ दिन माना जाता है, ये दोनों दिन मंदिर में उचित संख्या में भक्तों को आकर्षित करते हैं। गणेश चतुर्थी और गणेश जयंतीबड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है, जब 500,000 से अधिक लोग मंदिर में पूजा के लिए एकत्र होते हैं। गणेश चतुर्थी या गणेशोत्सव गणेश का केंद्रीय त्योहार है जो हिंदू महीने भाद्रपद (अगस्त-सितंबर) में उज्ज्वल चंद्र पखवाड़े के चौथे दिन आता है। गणेश जयंती या माघी गणेशोत्सव गणेश का जन्मदिन है, जो हिंदू महीने माघ (जनवरी-फरवरी) में उज्ज्वल चंद्र पखवाड़े के चौथे दिन आता है । [5] [10] [11] [12] मंदिर में अक्सर मुंबई से श्रद्धालु आते हैं । कालू नदी, एक छोटी नदी है जो अपने ऊपरी प्रवाह में टिटवाला के करीब बहती है। कालू नदी भी टिटवाला से थोड़ी दूर अंबिवली के करीब बहती है। यह नदी पश्चिम की ओर बहने के बाद अपने बहाव में छोटी भातसा नदी में मिलती है, जो मुंबई के औद्योगिक उपनगर कल्याण के पास उल्हास नदी में मिल जाती है। 45 किलोमीटर (28 मील) के अपने आगे के मार्ग में, नदी को कई औद्योगिक इकाइयों से अपशिष्ट प्राप्त होता है।[12]

निष्कर्ष

इस तीर्थस्थल पर, गणेश मंदिर के अलावा, दूसरा प्रसिद्ध मंदिर कृष्ण के स्थानीय रूप विठोबा और उनकी पत्नी रुक्मिणी को समर्पित है । श्री शनि मंदिर श्री स्वामी समर्थ मठ, सदगुरु निवास, टिटवाला (ई) के पास है। टिटवाला (ई) में श्री साईं बाबा मंदिर, टिटवाला स्टेशन के पास श्री हनुमान मंदिर है। एक और प्रसिद्ध मंदिर अंबरनाथ में है , जो 11वीं शताब्दी का है, इसका निर्माण वास्तुकला की हेमाडपंथी शैली में किया गया है, जिसका नाम इसके परिचयकर्ता और संस्थापक, देवगिरी के सेउना यादवों के दरबार में प्रधान मंत्री हेमाडपंत के नाम पर रखा गया है।. वैष्णो देवी मंदिर टिटवाला स्टेशन से पूर्व की ओर दक्षिण दिशा की ओर 22 मिनट की पैदल दूरी पर टिटवाला में स्थित है। यह माता भवतारिणी - वैष्णो देवी का मंदिर है। मंजू माताजी इस मंदिर की देखभाल करती हैं और हर हफ्ते मंगलवार या शुक्रवार को चौकी का आयोजन करती हैं। बड़ी चौकी साल में दो बार नवरात्रि में अष्टमी को आती है। दूसरा मंजू माता (लुधियाना) और दूसरा टिटवाला (ठाणे) में है। माता रानी के दर्शन के लिए लगभग 300,000 की भारी संख्या में लोग आते हैं। अक्टूबर के दौरान दुर्गा पूजा को अकाल बोधन या असामयिक आह्वान, वसंत

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

नवरात्रि के रूप में भी जाना जाता है, जिसे चैत्र नवरात्र या वसंत नवरात्रि या बसंत नवरात्रि के रूप में भी जाना जाता है।[13] चूंकि यह नवरात्र रामनवमी के साथ मेल खाता है, इसलिए इसे रामनवरात्रि भी कहा जाता है। वसंत नवरात्रि (चैत्र)। भगवान राम जिन्होंने बदल दिया दुर्गा पूजा का काल। भगवान राम रावण से युद्ध शुरू करने से पहले देवी दुर्गा का आशीर्वाद लेना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने आश्विन (अक्टूबर-नवंबर) के दौरान देवी दुर्गा का आह्वान किया। भक्तों को बटुए, बेल्ट और सुविधाजनक बैग जैसी चमड़े की कोई भी वस्तु पहनने की अनुमति नहीं है। स्टेशन से परिवहन सुविधाएं उपलब्ध हैं।[15]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "पता लगाएं कि सप्ताह का कौन सा दिन किस भगवान को समर्पित है!" . ज़ी न्यूज़ । 25 जून 2016 । 5 अगस्त 2018 को लिया गया .
2. ^ "टिटवाला गणेश मंदिर" । ट्रिपएडवाइजर ।
3. ^ "स्थान:टिटवाला"। महाराष्ट्र गजेटियर. 19 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
4. ^ "कालिदास के लिए अध्ययन गाइड: शकुंतला की पहचान"। स्रोत: कालिदास: समय का करघा। पेंगुइन पुस्तकें। 14 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
5. ^ "टिटवाला"। कल्याण डोंबिवली नगर निगम (केडीएमसी)। 15 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
6. ^ "ग्रेटर मुंबई में प्रसिद्ध मंदिर"। iv) श्री महागणपति (टिटवाला)। 14 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
7. ^ "टिटवाला"। 14 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
8. ^ मसूरकर, अल्पिता। "टिटवाला में सिद्धिविनायक मंदिर को नया स्वरूप दिया गया"। मुंबई मिरर । 14 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
9. ^ "जुड़वां शहरों में खूब मजा करें: टिटवाला मंदिर"। डीएनए . 14 अगस्त 2009 कोपुनःप्राप्त.
10. ^ "महाराष्ट्र: टिटवाला" । 15 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त .
11. ^ "टिटवाला" । 6 सितम्बर 2007 को मूल से संग्रहीत । 14 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त .
12. ^ "माघी गणेशोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 7 फ़रवरी 2003 . 19 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त .
13. ^ "गणपतिपूजन" । महाराष्ट्र राज्य गजेटियर - ग्रेटर बॉम्बे जिला । 17 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त .
14. ^ कुमार, अरविंद; सीपी बोहरा; एलके सिंह (2003)। पर्यावरण, प्रदूषण एवं प्रबंधन । खनिजों की सामग्री में कालू नदी पर औद्योगिक प्रदूषण के प्रभाव के साथ पौधों की वृद्धि दर का संबंध । एपीएच प्रकाशन। पी। 547. आईएसबीएन 9788176484190. 14 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त .
15. ^ "मुंबई के आसपास के तीर्थ - टिटवाला" । महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम। 2004 . 14 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त .

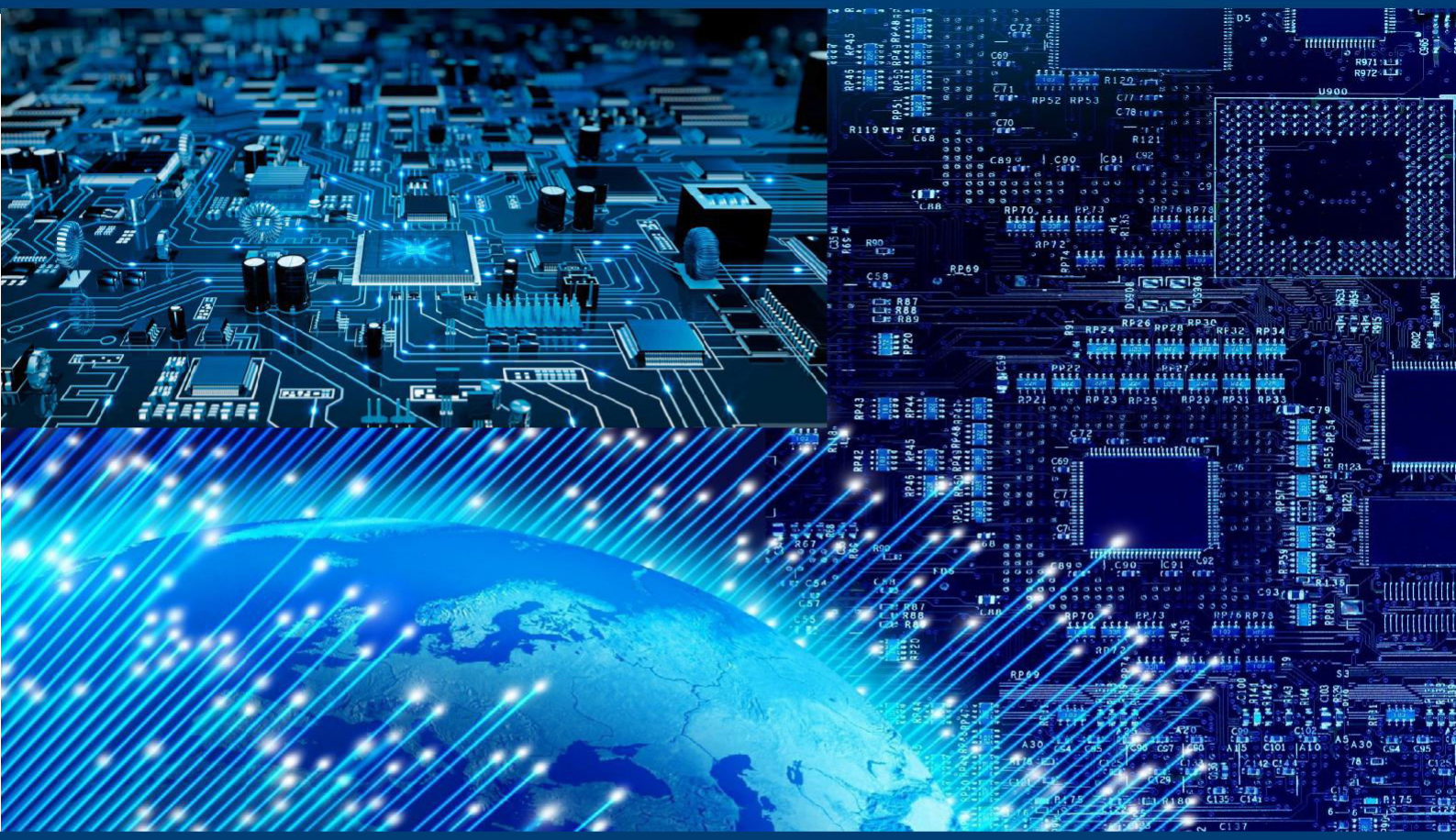

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |